मनुष्य बनो
BE MAN
ਮਨੁੱਖ ਬਣੋ
انسان بنو
संरक्षक
व

दातादयाल महर्षि शिवजी महाराज

परमदयाल फकीर साहब जी महाराज

दयाल नन्दूभाई जी महाराज

* विषय-सूची *

क्रमाङ्क	विषय	लेखक	पृष्ठ
१	हमारी बात-गुरु की दात	(सम्पादक)	२
२	गुरु महिमा	(दाता दयाल जी)	३
३	विष्णु पुरी जी की कथा	(,,)	४
४	मौज	(परम दयाल जी)	५
५	मौज भाग १	(,,)	१०
६	मौज भ ग २	(,,)	१३
७	ग़ज़ल	(पीरेमुग़ाँ साहब)	१६
८	कलामे नन्दू	(दयाल नन्दू भाई)	१७
९	मौज भाग ३	(परम दयाल जी)	१७
१०	सूरमा का अंग	(दाता दयाल जी)	२१
११	चीन और भारत युद्ध की भविष्य वाणी कलामे खुशदिल		२३
१२	मौज भाग ५	(परम दयाल जी)	२४
१३	डा० परसराम अग्रवाल के पत्र का उत्तर परम दयाल जी द्वारा		२७
14	Letter of Data Dayal ji to Mahatma Gulabchand ji Anand of Varanasi		28
१५	दाता दयाल जी महाराज के अमृत-वचन		२९
१६	मौज	(परम दयाल जी)	३४
१७	मौज	(,,)	३७
१८	ग़ज़ल	(पीरेमुग़ाँ साहब)	४०

प्रकाशक-मुन्शीलाल गोविल विश्वप्रेमी, दयाल कम्पाउण्ड, अलीगढ़ ।

मुद्रक-पं० प्यारेलाल भा, चित्रा प्रिंटिङ्ग प्रेस, अलीगढ़ ।

हमारी बात---गुरु की दात।

मौज का है खेल सारा, मौज का है कारोबार।
मौज का ही करते हैं, अब हम रिसाले में इज़हार॥

गुरु के सतसंग से हमें, कुछ मौज की आई समझ।
दिलो जाँ से करते हैं, उनका शुक्रिया बार बार॥

गुरु के प्रति हम क्यों कृतज्ञता प्रकट करते हैं? मौज का खेल हम नहीं जानते न समझते थे। वह उन्होंने अपनी करनी और रहनी से सतसंग द्वारा हमें समझाया। करके दिखलाया। इसीलिये उनका हमें आदेश है कि 'मनुष्य बनो' जीओ और जीने दो। कहो नहीं। करो। करते करते रहनी में आ जाओगे। उनके सदृश बन जाओगे।

यह करनी का भेद है, नाहिं बुद्धि विचार।
कथनी तजि करनी करो, तब पाओ कुछ सार॥

करनी करे सो पुत्र हमारा, कथनी कथे सो नाती।
रहनी रहे सो गुरु हमारा, हम रहनी के साथी॥

रहनी में रहना ही हमारी समझ में मौज का खेल आया है। कोई चिंता फ़िक्र नहीं रहती। मौज-मौज में जीवन व्यतीत होता है। न ऊधो का लेन न माधो का देन।

काम को जानिब है रुख़, और काम ही से काम है।
इब्तदा इसकी ख़ुशी, इसका ख़ुशी अन्जाम है॥

आपको यह शुभ संदेश पढ़ कर हर्ष होगा कि हुज़ूर परमदयाल जी महाराज ने मौजाधीन अपने बसंत और शिवरात्रि के दौरे का प्रोग्राम इस प्रकार भेजा है। होशियारपुर से प्रस्थान २५-१-६३ संध्या समय ५ बजे की गाड़ी से चल कर २६-१-६३ को प्रातः काश्मीर मेल से देहली पहुँचेंगे और २७-१-६३ को संध्या समय जी. टी. एक्स-प्रेस से हनमकुण्डा को प्रस्थान करेंगे। ३०-१-६३ से १-२-६३ तक वहाँ सतसंग होगा। २-२-६३ से ११-२-६३ तक पूना व भिलाई ठहरेंगे। वहाँ से लौटकर १२-२-६३ को इटारसी, १३-२-६३ को कटनी, १४, १५, १६-२-६३ इन्दौर आदि की ओर सतसंग होगा, २०-२-६३ को अलीगढ़ पहुँचेंगे दयाल नगर दयाल धाम शिवरात्रि सतसंग २२-२-६३ को होगा और २५-२-६३ को होशियारपुर पहुँचेंगे।

☆ मनुष्य बनो ☆

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मुदच्यते ।।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

वर्ष ११ । नवंबर १९६२, कार्तिक, अगहन मासे-वि०२०१९। सं० २।१२२

सतगुरु महिमा

बिन गुरु ज्ञान विवेक न होई। गुरु बिन पन्थ न चालो कोई ।।
"गुरु से लीना नाम रसायन। घट से भागी शङ्का डायन ।।"
मन परतीत गुरु की लाओ। गुरु मिलें तब भक्ति कमाओ ।।
गुरु बिन काज करो नहीं भाई। गुरु चरणन पर बलि २ जाई ।।
राखे मन में गुरु परतीती। हो सुख सकल कामना जीती ।।
"गुरु हैं दाता गुरु हैं दानी। गुरु आराधो छिन-छिन प्रानी ।।"
"गुरु समान नहिं कोई रक्षक। कुल कुटुम्ब सब जानो तक्षक ।।"
"सत्त नाम सत्त पुरुष गुरु हैं। अलख अगम राधास्वामी गुरु हैं ।।"
"गुरु की कीजे हरदम पूजा। गुरु समान कोई देव न दूजा ।।"
गुरु चरनन पर बलि-बलि जाऊँ। आठ पहर गुरु का यश गाऊँ ।।
गुरु को सुमिरूँ गुरु को ध्याऊँ। माथे गुरु पद रज को लगाऊँ ।।
गुरु ने गुप्त भेद दिया दान। गुरु ने सार बताया आन ।।
गुरु ने अलख वस्तु लखवाया। गुरु ने अगम रूप दरशाया ।।
जबलग नहिं गुरु भक्ति दृढ़ानी। तबलग निश दिन रहे अज्ञानी ।।
रात अंधेरी आंख न सूझे। केहि विधि प्रेमी गुरु पद पूजे ।।
गुरु मिले गुरु पद दरसाया। आँख खुली अन्धकार हटाया ।।
तेज पुञ्ज का भया प्रकाश। ज्ञान सूर ने किया उजास ।।
सत्त सत्त का सत प्रकटाया। आतम, परमातम दरसाया ।।
घट में प्रकटा सत का नूर। बाजे निस दिन अनहद तूर ।।

विष्णुपुरी जी की कथा (दाता दयाल)

विष्णुपुरी जी माधव सम्प्रदाय में श्रीकृष्ण चेतन्य के शिष्य थे, गुरु ने इन्हें काशी जी में रहने का आदेश दिया और वहीं ठहर कर प्रचार का कार्य करते थे। श्रीकृष्ण चेतन्य जगन्नाथपुरी में थे और वहाँ भजन कीर्तन की धूम मचा रक्खी थी। किसी समय उनका स्मरण हुआ। मण्डली के साधुओं ने कहा विष्णुपुरी जी काशी में केवल इसी विचार से रहते हैं कि वहाँ मरते समय मुक्ति होती है। और इसी कारण जगन्नाथ पुरी में नहीं आते।" चेतन्य जी बोले तुम्हारा विचार ग़लत है। विष्णुपुरी जी काशी में केवल सतसंग कराने के विचार से रहते हैं वरन् उनको न बन्धन का खटका है न मुक्ति की इच्छा है।" साधुओं ने इस उत्तर को सही नहीं माना। तब गुरु ने उन्हें पत्र लिखा "हमको जवाहरात की माला की आवश्यकता है, शीघ्र भेज दो।" विष्णुपुरी जी जो गुरु भक्ति के प्रताप से शुद्ध और प्रकाशित हृदय होगये थे, गुरु जी के मन्तव्य को समझ गये और श्रीमद्भागवत के रत्न सागर से ५०० सुन्दर श्लोक छाँटकर पुस्तकीय रूप में चेतन स्वामी के पास भेज दिये। यह भक्ति-भाव को उभारने वाले श्लोक थे और सभी चोटी के थे। इसका नाम उन्होंने 'भक्त रत्नावली' रक्खा था। साधुओं ने इसको पढ़ा और समझ गये कि विष्णुपुरीजी केवल गुरु के आदेश से सतसंग कराने हेतु ठहरे हैं और उनका ध्यान मुक्ति बन्धन की ओर नहीं है।

गुरु समरथ का सेवक पूरा, दूर निकट नहीं जाने।
गुरु की आज्ञा सिर पर धारे, गुरु की आज्ञा माने॥
कर्म करे और बनै न कर्त्ता, अपना आपा खोवे।
बन्धन बँधा रहे निर्बंधा, आनन्द निद्रा सोवे॥
मुर्ग़ाबी ज्यों रहे नीर में, ग़ोते मारे उभरै।
पानी भीगे पङ्ख न उसका, त्यों सेवक जग सुधरै॥

कमल बसे पानी के भीतर, पानी अङ्ग न लागै।
वैसे सेवक रहे जगत में, सोया जग में जागै॥
सुरत शब्द की करै कमाई, दसवें द्वार ठिकाना।
राधास्वामी का सो बालक, स्याना चतुर सुजाना॥

—:o:—

मौज (परम दयाल जी महाराज)

दशहरे के सतसंग पर मौज देहली ले गई। तीन सतसंग हिन्दू महासभा भवन में दिये। दो सतसंग ३५।C. इर्विन रोड पर दिये। जैन मुनी हुजूर सुशील कुमार जी के दर्शन किये। हुजूर संत कृपाल सिंह के चरणों में सिर झुकाया और हुजूर बाबा चरन सिंह के सतसंग से लाभान्वित हुआ। उनके सतसंग के प्रभावों से प्रभावित होकर:—

दिल का हुजरा साफ़ कर, जानां के आने के लिये।
ध्यान ग़ैरों का हटा, उसके बिठाने के लिये॥

की पूर्ण व्याख्या ३५।C इर्विन रोड़ पर की गयी। दिल का हुजरा क्या है और वह जाना कौन है? वर्षों के अभ्यासियों के लिये जिनको समय बीत गया उस यार के दर्शनों की धुनि में, मैंने अपने जीवन के अनुभव के आधार पर वर्णन किया और श्री मोहन लाल नय्यर से प्रार्थना की है कि वह टेपरेकोर्डिंग मशीन से सुनकर उसे लेखनी बद्ध करके 'मनुष्य बनो' को भेज दें।

जब हुशियार पुर के लिये चलने लगा तो सेठ गिरधर सिंह वारंगल निवासी जिन्होंने हनमकुन्डा सतसंग घर को स्थापित करने में अपना तन, मन, धन अर्पण किया है, हट की कि वह भी हुशियार पुर चलना चाहते हैं। मैंने पूछा क्यों? कहने लगे माता जी (मेरी स्त्री) के दर्शन करना चाहते हैं।

मैं हँसा और संसार वालों को कहता हूँ कि सतगुरु की कोई स्त्री नहीं होती। न उसके कोई माता-पिता होते हैं और न संतान

होती है। वह अखण्ड मण्डलाकार तत्व है। उसके रूप की समझ केवल किसी मेरे जैसे सत्यप्रिय, निष्काम, निष्कपट पुरुष की संगत से और थोड़े साधन से आती है। उनके प्रेम के भाव का आदर करते हुए मैंने आज्ञा दे दी। आज उनको गाड़ी में सवार कराकर लौट कर घर पर आया, चलते चलते कहने लगे महाराज जी बसंत पर अवश्य आना। और अब अकेला हूँ सोचता हूं :—

मिल गई इज़्ज़त मुझे, और मिल गया मान है।
साथ ही में मिल गया, मुझे सच्चा ज्ञान है॥
मुर्शिद दयाल के अहसान का, जज़्बा दिल में पैदा हुआ।
उठा, मूर्ति को सिर नवाया यह उनका अहसान है॥

दाता दयाल के स्टेचू (मूर्ति) के आगे खड़ा हुआ नतमस्तक हो गया। क्योंकि मैंने उस मालिकेकुल, ज़ात, अपरम्पार परमतत्व को इस पवित्र पुनीति विभूति में जिनकी मूर्ति सम्मुख है माना था एक खोज थी, कुरेद थी और लगन थी।

ऐ मालिकेकुल जाते अकबर परमतत्व लामकान।
खोज तेरी थी मुझे जब से आया था इस जहान॥
थी यह ख्वाहिश कह जाऊँगा खोज का अंजाम मैं।
कर दिया जो कुछ कि समझा अपनी वाणी से बयान॥
अहसान है आपका आपने मेटा मेरा भरम।
मिट गया अब सारे का सारा मेरा अज्ञान॥

हाँ, याद आया! सतसंग में दयाल की मायी (भागवती) भी आई थी ज्ञान रहस्य देने के लिये दातादयाल जी ने अपने आपको इस मायी का पुत्र बनाया और उसको माता कहा करते थे, और जो शब्द उनको दातादयाल लिखा करते थे उन्होंने पढ़ा और मैंने उन शब्दों की व्याख्या कर दी। मुझे आशा है कि नैयर साहब उसकी भी एक प्रति टेपरेकोर्डिङ्ग मशीन से लेकर 'मनुष्य बनो' को भेज देंगे। अहा! आज दातादयाल के खेल याद आते हैं। किसी के वे

पुत्र बने, किसी के पिता और किसी के कुछ न कुछ बन कर आपा सार भेद बतलाने, रहस्य जतलाने का प्रयत्न किया और मेरे जैसे अज्ञानी मूर्ख को ज्ञान देने के लिये आहा ! अपना पवित्र मस्तक मुझ मूर्ख के चरणों पर रख कर नमस्कार किया था और जगत गुरु की पदवी दी थी, किन्तु साथ ही कहा था अरे अज्ञानी फ़क़ीर ! तुममें ९९ प्रतिशत दोष हैं किन्तु एक गुण है कि तुम सत्य प्रिय हो। इस कर्म के करने से तुमको वह वस्तु मिल जायेगी जिसकी कि तुमको खोज है। वह मिल गयी। अब मैं परम दयाल बनकर उस ऋण को उतारता हूं जिससे कि वर्षों के सतसंगी और खोजी रहस्य और भेद की समझें।

कठिन माया जाल है और कठिन काल कराल है।
अपनी बुद्धि में फँसा हुआ इन्सान बेहाल है॥
बात कुछ है समझते कुछ इसलिये खस्ता हाल है।
फ़िकर मत अब तुम करो प्रगटा फ़क़ीर दयाल है॥
मेरी संगत में जो आयेगा और सुनेगा मेरे बचन।
मुझको निश्चय है बड़ा वह समझेगा, क्या पद दयाल है॥

यह कार्य जो मैंने किया है इसी भाव से किया है और कोई निज स्वार्थ नहीं है।

मौजाधीन मैंने आन्तरिक योग के पंचनाम, पंच कोष आदि का उल्लेख जहाँ तक सम्भव हो सका निज अनुभव के आधार पर इस पत्रिका के अक्टूबर विशेष अंक में वर्णन कर दिया है। धार्मिक और पांथिक भ्रमों और संदेहों को दूर करने के लिये 'सार का सार' पुस्तकीय रूप में पहला भाग शिव में प्रकाशित कर दिया है। और दूसरा प्रकाशित हो रहा है।

आज अन्तिम खोज के क्रम में कहता हूँ कि जब यह मेरा चोला छूट जाय तो इसकी अस्थियों को किसी स्थान पर गाड़ कर उसके ऊपर 'मनुष्य बनो' का झण्डा लगा दिया जाय जिससे कि भावी

सन्तान को विचार मिलता रहे कि कोई खोजी प्रकृति ने प्रगट किया था और उसकी खोज का परिणाम मानवता निकली थी। बस। धार्मिक और पांथिक उन्मत्तता के पश्चात जब मैं साधन करता हुआ सर्वव्यापकता अथवा अप्रकाश और अशब्द गति में जाता हूं तो:—

भूल जाता हूँ अहसास तन मन और शब्द प्रकाश को।
छोड़ कर मस्कन दिमाग़ी, पा जाता हूं अपनी ज़ात को॥

सन्त कबीर ने भी अन्तिम अवस्था यही वर्णन की है :

"जहाँ पुरुष तहाँ कुछ नाहीं, कहें कबीर हम चीन्हा।
जो कोई हमरे सेना समझे, पावे पद निर्वाना॥"

मेरा जब वहाँ से उत्थान होता है तो सोचता हूँ। जब मैं अपने इस आंशिक जीवन को समाप्त करके इस अवस्था में होता हूं तो यद्यपि मेरे लिये संसार नहीं रहता है किन्तु संसार तो विद्यमान है इसलिए मैं इस परिणाम पर आया हूं कि प्राणी एक चेतन का बुलबुला है, वह उस अकाल गति से प्रगट हुआ और उसी में समा गया।

यह सब खेल मौज के आधीन है!
करे करावे आप ही आप। मानुष के नाहीं कुछ भी हाथ॥

यह जो खोज मैंने की, यह भरम था, अज्ञान था। दातादयाल की बाणी है :—

किसी की तलाश हो जो हर वक्त रूबरू है।
यह जुस्तजू नहीं है तौहीने जुस्तजू है॥

किन्तु यह अज्ञान, भ्रम शीघ्र ही नहीं जाता है। किसी पूर्ण पुरुष की दया हो और साथ ही मनुष्य का भाग्य हो तब दूर होता है।

हुजूर पूज्य बाबा चरनसिंह जी ने जिस शब्द की व्याख्या सतसंग में की थी वहाँ तुलसी साहब शेख तक़ी को अंतिम कड़ी में कहते हैं कि ऐ तक़ी! पूर्ण पुरुष से जाकर मिल जो तुझे उसके होने का फ़हम (ज्ञान) देगा जिसको कि तू खोज करता है। वह पूर्ण पुरुष

के इतना निकट है जिस प्रकार शहेरग होती है। यही व्यवहार मेरे साथ दातादयाल ने किया। शहेरग सुषमना नाड़ी है।

इस अनुभव के पश्चात चूँकि मुझे जगत कल्याण का काम दिया था, मैं कहता हूं कि यह परमार्थ यदि कोई सच्चा पथ-प्रदर्शक मिल जाय तो सुगम है किन्तु स्वार्थ कठिन है। इसलिये कहे जाता हूं।

इन्सान बनो, इन्सान बनो, इन्सान बनो ऐ भाई।
इन्सानियत ही मज़हब है, जीओ और जीने दो भाई॥
संसार यह अगमापायी है, इसमें नहीं थिरताई।
सोच समझकर रहो जगत में, इसमें है सच्ची भलाई॥

मैं शान्ति के खोजियों को कहूँगा कि मेरे भाषणों और प्रवचनों को सुना करो, तुम्हारा कल्याण होगा।

यदि मौज से जीवन शेष है तो बसन्त पर हैदराबाद की ओर जाऊँगा अन्यथा राधास्वामी।

काम अपना कर चले, जो दाता ने बख़शा था हमें।
अपना जीवन बना चले और कह चले औरों के लिये॥
राधास्वामी नाम की बरकत से, और दयाल की दया से।
सुरखरू हम हो गये और आबाद सुतलक़ हो चले।
खुश रहे यह नस्ले इन्सानी, भारत का कल्याण हो।
हमने जो प्रण किया था, उसको पूरा कर चले॥

दातादयाल और हुज़ूर सांवले शाह! आपने मुझे कार्य दिया था। मैंने जो अनुभव किया वह कहा। सम्भव है मैं त्रुटि पर हूँ कोई दावा नहीं है, किन्तु अपनी निष्ठा से स्वच्छ-पवित्र रहते हुए निष्काम और निष्पक्ष हो कर कार्य किया है :—

आपका ही काम है और आपका ही नाम है।
आप ही हैं राधास्वामी आप ही का धाम है॥
मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागेगा का मोर॥

नोट:--यदि रेडियेशन के सिद्धांत की सत्यता मेरी समझ में न आती तो मैं सतसंग कराना इस समय एक महान अपराध समझता। इसलिए वर्तमान महात्माओं को करुणा पूर्ण हृदय से कहना चाहता हूं कि यदि आपका यह नाम दान अथवा सतयंग का कर्म किसी भी निज अथवा पांथिक स्वार्थ के लिये है और आप स्वयं इस निर्बन्धता में नहीं हैं तो आपकी रेडियेशन से दूसरों को परम शान्ति और सुख नहीं मिल सकता है। हाँ! जो सच्चे जिज्ञासु और खोजी हैं उनका आदर-मान प्रकृति को स्वीकृत होता है इसलिये मौज स्वयं उनका कार्य बना देगी।

शब्द परम पुरुष स्वामी जी महाराज ॥

सुरत अब जाना निज घर अपना। शब्द खोज हम पाया अपना॥
जक्त अब भासा हमको सुपना। छूट गया सब भर्म कलपना॥
कहा करे ले जप और तपना। यामें काल करे जग ठगना॥
संत भेद पर डाला ढकना। जीवन पाया बहुत भटकना॥
अब यामें कोई कभी न अटकना। जैसे बने तैसे मन को झटकना॥
सुरत शब्द ले गगन सटकना। वहाँ जाय कर बहुत मटकना॥
करम धरम से दूर फटकना। सतगुरु चरनन माँहि लिपटना॥

मौज भाग १ (परम दयाल जी महाराज)

चीन और भारत के मध्य युद्ध सम्बन्धी बातें समाचार पत्रों तथा रेडियो द्वारा ज्ञात हुयीं। मौज के खेल को देख कर एक विशेष प्रकार की आनन्द की अवस्था छाजाती है।

जगत का खेल होता है, जगत में ऐसा होता है।
यह रचना प्रभु की ऐसी है, जहाँ यह चक्र चलता है॥
कोई जनमता कोई मरता है, कोई दुखिया कोई सुखिया है।
कोई राजा कोई निर्धन, कोई सरपंच मुखिया है॥

इस अष्टमी को जब 'मनुष्य बनो' का झण्डा अपने निवास

स्थान पर बदलने लगा तो पहिले समाधि में गया था। अंतर में चलते-चलते सुरत खोपड़ी की चोटी (बोदी) के स्थान पर गई, एक विशेष प्रकार का अनहद शब्द गूंजा और सर्वव्यापकता की अवस्था आई। जब चेतनता हुई तथा झंडे को हाथ लगाया तो विचार हुआ:—

यह दुनियाँ मौज ही की है, जो हो रहा है अच्छा है।
क़ुदरत का यह है सब खेल, उसी ने रच रक्खा है॥
क्या कल्याण जग का करेगा, ऐ फ़क़ीरा तू।
जिसने बनाया जगत यह, वही मालिक सच्चा है॥
"लख चतुराइयाँ बड़ाइयाँ इक न चलै नाल"

मैं वह पुरुष हूं जिसने समस्त आयु खोज में व्यतीत की और अनुभव के पश्चात् प्राकृतिक नियम को समझकर 'मनुष्य बनो' की पुकार की। आज वह दिन आया कि मुझे सब ओर से प्रत्येक प्रकार से उपराम हो गया:—

तरके दुनियाँ, तरके उक़बा, तरके मौला कर दिया।
तरक का भी तरक है, तरक से दिल भर गया॥
संसार की दृष्टि में उनमत्त हो गया।

मित्रो! यह जो कुछ हो रहा है, मौज है। अन्य शब्दों में हमारे सब के विचार, भाव, कर्म और आशाओं का फल है।

'मैंने विश्वशान्ति' 'रीयल इण्डिपेण्डेन्स' पुस्तक वर्षों हुए लिखी थी। 'आजादी की कुंजी' लिखी। "मनुष्य बनो" की पुकार की। किसी ने सुना। नहीं:—

सुनते नहीं हैं ग़ाफ़िल, किसी सत्पुरुष का कलाम।
बल्कि यह संसार वाले, करते हैं उसको बदनाम॥
कौन किसको कहे और कौन किसी को समझावे।
सोच कर फ़क़ीर यह, मालिक की गोद समावे॥
फिर भी गुरु ऋण से उऋण होने के लिये हूँ कहता।
गो जानता हूँ मित्रो! कोई नहीं है सुनता॥

इन्सान बनो, इन्सान बनो, इन्सान बनो कहूंगा।
जो मौज दयाल कहलाती, वह कहता ही मैं रहूँगा॥
दिल को करो साफ़ तुम और प्रेम को पालो।
मजहब मिल्लत के झगड़े, दिल से तुम निकालो॥
हिर्सो हविस की ख्वाहिश, मज़ाहिब के झगड़े।
कर-करके देखलो सब, खून की नदियाँ बहालो॥
ज़ाती राय देता, मिल जुल के फ़ैसला करलो।
क्यों इन्सान के खून से होलियाँ खेलो॥
बुरा मानोगे तुम, समझोगे मुझको बुज़दिल।
मैं बुज़दिल नहीं हूँ हरगिज़, में रखता हूँ अमर दिल।
इन्सान हो गर तुम, इन्सानियत अपनालो।
यह है आवाज़ फ़क़ीरी, सुनलो और सुनादो॥

'मनुष्य बनो' से मेरा तात्पर्य यह कदापि नहीं कि तुम चूड़ियाँ पहन कर घर में बैठो। "जब तक जीना तब तक सीना"।

युद्ध के समय यदि वह करना ही आवश्यक हो तो लड़कर मर जाना एक शाने फ़क़ीरी है। साधु, सती और सूरमा की एक ही गति है। होनी महा प्रबल है।

होनी होके रहे फ़कीरा, टरे नहीं टारी।
तुझ को क्या पड़ी लिखता है, बुद्धि गई तेरी मारी॥
मौज आधीन रहो तुम भाई, गुरु की गोद प्यारी।
यह संसार है अगमापायी, होनी हो रहे सारी॥

मेरा कार्य सबका भला चाहना है। सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि भारत का कल्याण हो। मानव जाति को मनुष्यता आये।

नोटः—वृद्ध होगया, फिर भी यदि मैं कोई शारीरिक सेवा इस युद्ध के क्रम में कर सकता हूँ तो उपस्थित हूं। देश की सेवा करना मानव का कर्तव्य है। शासन यदि कुछ कार्य देना चाहे और मैं उसे कर सकता हूँ तो आदेश दे। मैं ५०) मासिक कमाता हूं इसमें से

५) मासिक अपने प्रिय जवानों के लिये जो युद्ध में लड़ रहे हैं, जब तक निर्णय नहीं होता और मेरा जीवन शेष है देता रहूँगा। धार्मिक और पांथिक जगत वालों को कहूंगा कि मन्दिरों, मसजिदों, गुरुओं, महात्माओं को देने की अपेक्षा ऐसे अवसर पर तुम्हारा दान तुम्हारे और दूसरों के लिये लाभदायक होगा। यही वास्तविक पुण्य है।

देह धरा तो देह बन, देय देय कुछ देय।
धन दे, मन दे, ज्ञान दे, देह होयगी स्नेह॥
धन दिये धन ना घटे, नदी न घट्टे नीर।
अपनी आँखों देखलो, यों कथ कहें कबीर॥

मौज भाग २ (परम दयाल जी महाराज)

चीन और भारतवर्ष के युद्ध के वाह्य प्रभावों से मेरे मस्तिष्क में विशेष प्रकार के विचार उत्पन्न हुये। और उन विचारों का उत्तर आदि जो मेरे मन में उत्पन्न हुये उन्हें लेखनी बद्ध करता हूं। क्यों? इसका उत्तर केवल यह है कि 'मौज'! अपना कोई स्वार्थ नहीं, प्रयोजन नहीं। मौज मस्तिष्क हिलाती है और मैं लिख रहा हूँ।

ऐ फ़क़ीर! तूने जीवन उस मालिक परमतत्व के मिलने, जानने में व्यतीत किया। तेरा अपना ही विचार, भाव और विश्वास या जो तुझको दातादयाल महर्षि जी महाराज की पवित्र पुनीत विभूति के चरण कमलों में ले गया। वहाँ से तुमको फ़क़ीरी का संस्कार मिला और जगत के कल्याण का कार्य दिया गया। क्या तू जगत कल्याण कर सका? देश का विभाजन हुआ, रक्त पात हुआ प्राणी घर घर मारे फिरे। अब चीन और भारत का झगड़ा हो रहा है। तूने 'मनुष्य बनो' का झण्डा खड़ा किया, 'आज़ादी की कुञ्जी' पुस्तक लिखी 'मनुष्य बनो' पत्रिका प्रचलित है, अन्य पुस्तकें लिखीं,

क्या बना ? क्या कल्याण हो गया ? इस प्रकार के विचार मस्तिष्क उत्पन्न हुए।

उत्तर—जगत का कल्याण अथवा मनुष्य का कल्याण केवल सतगुरु ही कर सकता है। मैंने सतगुरु के रूप में अपना कार्य कर दिया। यदि जगत ने अथवा प्राणियों ने उस उपाय, विधि, मंत्र, हित और मत का साधन नहीं किया तो मेरी आत्मा मुझे कह रही है कि तेरा अपराध नहीं है। संसारी जीव माया और काल ग्रस्त हैं। जब तक मानव को ठोकरें नहीं लगतीं, कोई सुनता नहीं, साधन करना तो दूर रहा।

इस जगत में गुरु अथवा सतगुरु के अतिरिक्त अन्य कोई रक्षक नहीं है।

प्रश्न—तूने भारत के कल्याण हेतु क्या किया ?

उत्तर—१५ अगस्त सन् १९४७ ई० में 'मनुष्य बनो' की पुकार की और अपनी पुस्तक 'मनुष्य बनो' में स्पष्ट वर्णन कर दिया। उसे अध्ययन करें।

प्रश्न—और क्या किया ?

उत्तर:— परस्पर द्वेष, ईर्षा, घृणा, मत्सर, भेदभाव के भावों के परिणामों के रहस्य को समझकर मैंने 'विश्वशान्ती' 'रीयल इण्डिपैण्डैन्स' लिखी कि किस प्रकार यह आपत्तियाँ, संकट, भूचाल, बाढ़, महामारी, युद्ध आदि होते हैं। किसीने इस पर ध्यान नहीं दिया बल्कि ऐसी विधि से कार्य किया गया कि चुनावों में यह द्वेष, ईर्षा, घृणा आदि और बढ़ गया।

प्रश्न:— और क्या किया ?

उत्तर:— इस धार्मिक और पांथिक अज्ञान, भ्रम को दूर करने के लिये अपने सतसंगों अथवा लेखों में जिस प्रकार सत्यता से मैंने कार्य लिया वह आज दिन तक सबने संकेत किया किन्तु स्पष्ट वर्णन नहीं किया, जिसको जन साधारण न समझ सके। मैंने विरोध

की परवाह न करते हुए भी वास्तविकता और सत्य के खोलने में कोई कमी नहीं रक्खी।

इन वर्तमान स्थितियों और परिस्थितियों से प्रभावित होकर मौज मुझसे लिखवा रही है। मुझे कोई निज स्वार्थ नहीं है, किसी की इच्छा हो सुने या न सुने। मुझ पर स्वयं इस अनुभव और ज्ञान से एक प्रकार की महान आनन्द की अवस्था छाई रहती है।

ऐ भारत वासियो! सुनो? यह संसार माया की छाया है। माया आप लोगों की बुद्धि, भाव, विचार और इच्छायें हैं। "जैसा ख्याल, वैसा हाल", "जैसी मति, वैसी गति", "जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि", "जैसी करनी, वैसी भरनी"।

इच्छा हो वह मेरे विचारों को पढ़ें या न पढ़ें। मुझे मौज ने एक कार्य दिया था और फ़क़ीर बनाकर प्रकट किया था। मुझे प्रसन्नता है कि मैं अपना कर्त्तव्य पूर्ण कर चला।

यह समस्त संसार स्थूल पदार्थ का सूक्ष्मपदार्थ अर्थात् विचारों से बनता है बल्कि यह संकल्प का घना रूप है। भाप जिस प्रकार बर्फ़ बन जाती है और बर्फ़ फिर भाप बन जाती है, इसी प्रकार हमारे विचार स्थूल जगत में रूप धारण करते हैं और कालान्तर में यह स्थूल जगत फिर सूक्ष्म प्रकृति में परिवर्तित होता रहता है। यह काल का चक्र है।

इस संसार के परिवर्तन से बचने के लिये सर्व श्रेष्ट उपाय तो इस अवस्था में चले जाने से होगा जहाँ यह काल और माया नहीं हैं। किन्तु यह मार्ग केवल सीमित मनुष्यों के लिये है। जन साधारण के लिये अपने मन, बचन और कर्म को शुद्ध रखना है जिससे कि इस संसार के जीवन में सुख और शान्ति रहे। मैंने इसलिये जन-साधारण के लिये 'मनुष्य बनो' की पुकार की है।

यू० ऐन० ओ० में अथवा पार्लियामेण्ट आदि में जिस प्रकार भी वार्तालाप होता है कहीं भी इस नियम को दृष्टि में नहीं रक्खा

जाता है। शासन अपने त्रुटि पूर्ण मान, प्रतिष्ठा तथा बड़प्पन के के लिये प्रयत्न करता है। इसी लिये मैंने पुकार की कि शासन में कर्तव्यशील मानव आवें अन्यथा यह युद्ध और झगड़े किसी न किसी रूप मे चलते रहेंगे। कोई सहायता नहीं कर सकता।

हे मानव! अपनी सहायता करने वाला है तो तू स्वयं किन्तु तेरी बुद्धि निश्चयात्मिक और मस्तिष्क सही नहीं है इसलिये तू त्रुटि पथ पर है।

सन्त अथवा पूर्ण पुरुष आदि तेरे सुधार हेतु उत्पन्न होते हैं, पुकार कर जाते हैं किन्तु तू सुनता नहीं है। दाता दयाल दर्शन कर गये :—

सुनते नहीं हैं दुनियाँ के, ग़ाफ़िल मेरा कलाम।
बेदार होके कहता हूं, ताबीर ख्वाब की॥

यह ख्वाब क्या है हमारे संकल्प हैं। अभी भी समय है। एक विचार वाले बनो। सुख और शान्ति की प्रबल इच्छा रक्खो। परस्पर सहायता का प्रण करो।

अपनी तो सब को पड़ी, अपने अपने काज।
हमको तो सब की पड़ी, सतगुरु राखो लाज॥
हम सेवक हैं गुरु के, सब की सेवा करें।
बोझ पराया आपना, सोच समझ सिर धरें॥

ग़ज़ल पीरेमुग़ां साहब

दम उलफ़त का भरो, बैठके दिलदार के पास।
ग़ैरियत आयेगी, गर जाते हो अग़यार के पास॥
मंज़रे नूर को, किस तरह कोई देखेगा।
बर्क़ ताबन्दा का है, जलवा रुखे यार के पास॥
आह से मेरे हिला करती है, बुनियादे मकान।
न कभी बैठूँगा मैं, सायाए दीवार के पास

तन्दुरुस्ती की हविस है, तो दवा चलके करो।
दर्द होगा जो कभी, बैठोगे बीमार के पास ॥
अपने हम जिन्स की, रग़बत से चले आते हैं।
नेक नेकों के, गुनहगार गुनहगारों के पास ॥
पीरेमुग़ाँ का करो संग हक़ीक़त के लिये।
भरम दूर होंगे सभी, बैठोगे जब यार के पास ॥

कलामे नन्दू

तू नहीं है ग़ैर मुन्शी, मैं नहीं हूँ ग़ैर अब।
तू बसा रहता है मुझ में, मैं तेरे अन्तर में हूं ॥
एक जाँ है दो हैं क़ालिब, एक इधर और एक उधर।
रहते हैं आपस में मिलके, जुम्तजू कुछ भी नहीं ॥
ग़ैरियत जाती रही, जाती सिफ़ात अब दोनों में।
रह नहीं सकते कभी, हरगिज़ जुदा ख़ुद आपसे ॥
छोड़ दे फ़िक्रे इबादत, ज़ात से मिल ख़ुश रहे।
ज़ात तेरी राधास्वामी, ख़ुशदिली इस ही में है ॥
राधास्वामी धुन को सुन, अन्तर में घट के आन कर।
चौथे पद में होगा बासा, संग की बरकत तुझको मिले ॥

मौज भाग ३ (परम दयाल जी महाराज)

समस्त रात्रि:---

ख़ुद को सौंप कर उस ज़ात मालिक को रहा आनन्द लेता।
सुबह उठा तो होश आया फिर इस जगत को देखा ॥

प्रातः ही तीन चार फ़ौजी जवान आ गये। घंटी बजी। मेरे आदमी ने मुझे सूचना दी। पहिले तो विचार हुआ कि मिलने से मना कर दूं। फिर चीन और भारत के युद्ध के विचार से सहानुभूति हुई और उन्हें बुला लिया।

फ़क़ीर--कहो! आप कौन हैं और कैसे आये हैं।

उत्तर--हम दर्शनों के लिये आये हैं। अवकाश पर थे। वापिस बुलाये गये हैं, आपका आशीर्वाद चाहते हैं।

प्रश्न--क्या आप नामधारी हैं ?

उत्तर--हाँ, हम व्यास के सतसंगी हैं।

प्रश्न--मेरे पास क्यों आये।

उत्तर--गत रविवार को सतसंग सुना, उससे प्रभावित हुए और विचार हुआ कि चलती बार महात्मा जी के दर्शन करते चलें।

प्रश्न--मैं महात्मा नहीं हूँ। महात्मा केवल एक ही हैं जो मालिक की जात है। आपका भाई हूं और भाई के नाते आपको बधाई देता हूँ कि आपको नाम की प्राप्ति होगी, यदि सच्चे हृदय से अपने कर्तव्य का पालन इस युद्ध में पूर्ण रूपेण करोगे।

प्रश्न--एक व्यक्ति कुछ समझदार था उसने प्रश्न किया--वह कैसे ?

उत्तर--जो नाम तुमको मिला था वह मुझे भी मिला था। नाम जपने वाले पहिले शरीर के अध्यास को त्यागते हैं। धन, स्त्री और भूमि को मौज के अर्पण करते हैं। अजपा जाप करते हुए पहिले शरीर सुन्न होता है अर्थात् शारीरिक अध्यास छूटता है, फिर मानसिक अध्यास छूटता है, तब ब्रह्म का देश अर्थात् प्रकाश का देश आता है। यद्यपि वास्तविक नाम तो अभी बहुत आगे है किन्तु इसमें तीन सुन्न लगाने पड़ते हैं।

तीन सुन्न के पारा। वह है देश हमारा या तुम्हारा ॥

प्रश्न--क्यों बात सत्य है या नहीं ?

उत्तर---हाँ ! तो फिर तुम यदि युद्ध में जाओ--क्या होगा ? घर बार को युद्ध के समय स्वयं भूलोगे और अपने अस्तित्व की ओर से स्वतः ही लापरवाही होगी। केवल तुम्हारा मन ही रहेगा। मैं यह इस कारण कह रहा हूँ कि मैं स्वयं पहिले युद्ध में खन्दकों में रहा हूँ जहाँ शत्रु बाहर से आक्रमण करते थे और हम भीतर से

गोलियाँ और मशीन गन आदि चलाया करते थे। यद्यपि उस समय मेरा शरीर तार का कार्य करता था किन्तु स्वचालित रूप से। इसलिये मैंने कहा कि आपको नाम जपने का सुअवसर मालिक दे और प्रथम सोपान को पार करते हुये, विजय का डंका बजाते हुये, वापिस आओ। तुम्हारा आदर और मान होगा। जिस प्रकार नामधारी जब इन सोपानों से पार जाता है अर्थात् त्रिकुटी के पश्चात् फिर वह जब इस शरीर में आता है तो उसको प्रसन्नता और आनन्द की प्राप्ति होती है।

प्रश्न—मेरी बात को सुनने से इस फ़ौजी के मुख पर लाली आगई। प्रसन्नता और आनन्द से मुख प्रकाशवान होगया। कहने लगा आपने नाम की व्याख्या खूब की। हम तो कानों में उँगलियाँ ही डालते रहे किन्तु शरीर से कभी प्रथक नहीं हुये।

उत्तर—जिनको नाम मिला है अथवा जो इस मार्ग के अधिकारी हैं उनको मौज अवश्य समय आने पर सफल बनाती है और किसी पूर्ण पुरुष, रहस्य ज्ञाता से मेल करा देती है। तुमने मेरा सतसंग २१-१०-६२ का सुना। मैंने बसरे बग़दाद के युद्ध के सम्बन्ध में अपनी और अन्यों की घटनायें बताई थीं। स्मरण रक्खें वह मालिक प्रत्येक समय तुम्हारा रक्षक है और अंग संग है। खूब खुल खेलो। यश प्राप्त करो और साथ ही नाम की भी प्राप्ति करो।

मैं सच्चे हृदय से चाहता हूँ कि तुम युद्ध क्षेत्र में जाओ और पूर्ण रूपेण अपने अपने कर्तव्य का पालन करो किन्तु साथ ही शरीर, घरबार, भूमि आदि की ओर से भी अपनी सुरत हटालो। क्या यही शिक्षा पोथी 'सार वचन' में नहीं है ? एक फौजी सत-संगी चकित होकर कहता है—बात तो आपकी सत्य है।

फ़क़ीर मस्ती में आकर—

गगन दमामा बाज्या, पड़ी निशाने चोट।

कायर भागे कुछ नहीं, सूरा भागे खोट ॥

सब सतसंगी नाम जपते हैं किन्तु ऊँचे नहीं जा सकते हैं क्योंकि उनको तन, मन, धन और घरबार का बंधन होता है। युद्ध क्षेत्र में यह सभी बंधन समाप्त हो जाते हैं और सुरत केवल एक ही ओर लगी रहती है। मौज ने प्रबंध किया है, इसलिये पारमार्थिक दृष्टि से आपको बधाई देता हूँ।

अब व्यवहारिक रूप से मेरी बात पर विचार करो। यह संसार अगमा पाई है। काल और माया का देश है। यहाँ परिवर्तन होता रहता है। जीवन और मृत्यु कोई वस्तु नहीं है। मानवीय सुरत न मरती है न जनमती है। यह इस देश में खेल खेलने आई है। इस विचार से भी आपको कोई भय, चिन्ता आदि नहीं होनी चाहिये। और भी सुनो :—

साधु, सती और सूरमा, इनका मता अगाध।
आशा छोड़ें देह की, तन में आंधका साध ॥

नाम के जपने वालों को सफलता ही उस समय होती है जब वह देह की आश त्याग देते हैं। इसलिये साधुओं का पद सती और सूरमा को दिया गया है, क्योंकि सती अपने पति के प्रेम में देह से विदेह होती है और सूरमा युद्ध-क्षेत्र में अपने देश-प्रेम में भी विदेह होकर लड़ता है।

मैं क्या करता हूं ? रात्रि को साधन के समय देह, गेह, मन और संकल्प आदि को त्याग देता हूं। फिर आगे प्रकाश और शब्द के मण्डल में रहता हूँ। यही नाम है और नाम क्या होता है। इसी प्रकार जो सूरमा युद्ध-क्षेत्र में विदेह रहते हुये प्राण त्याग देते हैं वे किसी रूप में भी इस भूमण्डल में जन्म नहीं लेते हैं। शास्त्र भी ऐसा ही कहते हैं। उनका शास्त्रों के कथनानुसार स्वर्ग लोक मिलता है, जहाँ साधु समस्त आयु तय करके जाता है वहाँ एक सच्चा सूरमा युद्ध-क्षेत्र में विदेह होता हुआ मर

कर आकाशीय रचना में जाता है।

हो मुबारक हो मुबारक ऐ मेरे दोस्तो।
जंग छिड़गई जन्म बना लो ऐ मेरे दोस्तो॥
जिन्दगी यह चन्द रोज़ा है आखिर को चलना है।
भाग कर मौत से कहाँ को जायगा नर दोस्तो॥

अब जाइये मैं सच्चे हृदय से आपके लिये चाहता हूँ कि आप देश की सच्ची सेवा करें और सफलता का मुकट आपके सिर पर हो। जब लौटकर आना तो अवश्य मिलना। राधा स्वामी।

सूरमा का अंग

सूर लड़े संग्राम में, छाँड़ी तन की आस।
साहब आगे सिर धरे, मन में बल विश्वास॥
रन में पग को गाढ़कर, करे न पीछे दृष्टि।
व्यापै तन मन में सदा, यक साहब का इष्ट॥
सूरा के सिर एक है, एक आस विश्वास।
एक भाव में रम रहा, पल पल स्वांस स्वांस॥
एक भरोसा एक बल, और एक भाव से काम।
एक धनी का सेवका, जपता मुख से नाम॥
तीर सहे भाला सहे, सहे खड्ग की धार।
रन में तत्पर होय रहा, तिस का वार न पार॥
सूरे की गति और है, कायर की गति और।
कायर तो भागा फिरे, सूर रहे एक ठौर॥
भागे कायर पीठ दे, बना न एकऊ काम।
बिना लड़े नहीं पाइये, सत्त धाम सत नाम॥

मौज-भाग ४ (ले०-परमदयाल जी महाराज)

प्रेम मालिक के जज्बे में गुम हो गया रात को।
गुम करके अपनी हस्ती, मिल गया मैं ज़ात को।
शब्द अनहद गूँजता था, और नहीं कुछ वहाँ।

सुबह होगई फिर, आगया हूँ बा होश हो ॥

चीन और भारत के युद्ध के प्रभाव मस्तिष्क में आये, ध्यान बदला और विचार हुआ।

इन्सानी नस्ल पर, हो दया ऐ मालिके कुल।
अपनी दया से होश दे, आये हमें अक़्ले कुल ॥

आहा ऐ, ज़ाते अकाल ! परमतत्व !! मानव जाति को बुद्धि दे। करुणा और दया की प्रार्थना करता हूँ। आन्तरिक ध्वनि हुईः—

सुन फ़क़ीरा होश कर, तुम को देदी है अक़्ले कुल।
जैसा करेगा कोई, लाज़मी भुगतेगा वह उसका फल ॥
इन्सान आज का खुद ग़रज़ है, मतलब परस्ती है अमल।
किस तरह हो सकता है, कि यह न पाये उसका फल ॥
क्या पड़ी तुमको फ़क़ीरा, आ मेरी अब गोद में।
रहने दे दुनियाँ को तू अपने करम के भोग में ॥
इक अरज़ मेरी सुनो, ऐ मेरे ज़ाते दयाल।
क्यों दिया था हो मुझे, जगत के कल्यान का ख्याल ॥
यह न होता ख्याल तो, भूल कर भी न कहता मैं कभी।
मौज तेरी ही है यहा तो, फिर न कहूँगा मैं कभी ॥

मौज है कि मैं उस संदेश को कह जाऊँ जो मुझे अपने अंतर में मिलाः—

यह जहाँ एक खेल है, मौज का ऐ इन्सानी नसल।
यह जो हो रहा है यहाँ पर, यह है उसका फ़ज़ल ॥
अपनी गरज़ और मान के लिये, इन्सान तू दुखी हुआ।
जैसा किया वैसा भरो, यह नियम कुदरत का बड़ा ॥

यदि सुख चाहता है तो हे मानव ! "दिल का हुजरा साफ़ कर दिल ही है सबसे बड़ा !" अपने मन बचन और कर्म को ठीक कर। अपने निज स्वार्थ, मान, बड़ाई को छोड़ कर परस्पर मेल मिलाप, प्रेमभाव को बनाये रख। एक दूसरे के काम आ। यह

संसार संकल्प से बना हुआ है। संकल्पमय और मनोमय है। जब तक तू अपने भाव विचार को शुद्ध पवित्र नहीं बनायेगा, यह झमेले समाप्त न होंगे। जैसा ख्याल वैसा हाल। जैसी मति वैसी गति, जैसी करनी वैसी भरनी।

मौज ने जीवन में जो रहस्य प्रदान किया वह अपने लेखों, भाषणों और सतसंगों में स्पष्टतः कह दिया। अपने कर्तव्य से निवृत होगया। कोई परदादारी नहीं रक्खी, जिससे कि संसार को वास्तविकता का ज्ञान हो। साधन करना आपके अपने हाथ में है:—

न कोई गद्दी, न कोई डेरा, न कोई मतलब, न कोई चेरा।
नरतन में पाया था फेरा, गुरु 'दयाल' का बना था चेरा॥
जो कुछ समझा वह कह डाला, मिटाया अपने कर्म का फेरा।
हित मानव जाती की खातिर, काम किया है बहुत घनेरा॥
अब करता हूँ भेंट खुद को, दायमी होगा गोद 'दयाल' में डेरा।
गोद दयाल है अनहद बानी, सुन २ उसको आनन्द लिया बहुतेरा॥

चीन-भारत युद्ध की भविष्य वाणी ! कलामे खुशदिल !!

आओ सुनायें तुमको, पुरलुत्फ़ इक तराना
होगी फ़तह हमारी, हमको यही सुनाना॥
ऐमाल पर निगाहें, पड़तीं नहीं किसी की।
है सब को यह शिकायत, अच्छा नहीं ज़माना॥
अफ़सोस कान रखकर, सुनता नहीं है कोई।
हर साँस आदमी की, कहती है इक फ़साना॥
मरते न हम तो आखिर, चारा ही और क्या था।
खुद जिन्दगी थी अपनी, मरने का इक बहाना॥
'खुशदिल' खुशी के सुपने, दिन रात देखते हैं।
रहेंगे यहाँ पर जब तक, अपना है आबोदाना॥

मौज-भाग ५ ले० परम दयाल जी महाराज

कोई व्यक्ति भी बाह्य प्रभावों से नहीं बच सकता है।

"संग दोष से कोई न बाचे, ऋषि, मुनि, ज्ञानी, ध्यानी।"

(दातादयाल)

रेडियो पर श्री नेहरू जी का भाषण सुना, समाचार पत्र पढ़े। सुरक्षा परिषद बनाने के उपायों का उल्लेख भी सुना। धन्य है। वास्तविक और सत्य सुरक्षा मानसिक और आत्मिक ज्ञान के अनुसार मौज आधीन गुरु-ऋण से उऋण होने के लिये, वर्णन कर जाना चाहता हूं। यह संसार संकल्पमय है। मनोमय जगत अथवा ब्रह्म-मय जगत है। कर्म का चक्र चलता रहता है। संसार में उलट फेर आते रहते हैं, किन्तु जो कुछ होता है वह किसी अच्छाई के लिये ही होता है। मानवीय बुद्धि दूरदर्शी नहीं है। इस लि० नहीं निश्चय कर पाती कि:—

"जो करिहै सो भला।"

मेरा जीवन इस मानसिक और आत्मिक खोज में व्यतीत हुआ। जो कुछ अनुभव किया वह केवल लिखित रूप (Theory) नहीं रही वरन् निरीक्षण है जिसका प्रमाण इस पत्रिका में आवश्यकता से अधिक दिया जा चुका है।

संसार की दृष्टि में उन्मत्त बना। कटाक्ष की बातें सुनीं। किन्तु निश्चित होकर अपने कर्तव्य का पालन किया। जो मौज ने बलात करा लिया।

यह वर्तमान संकट हमारे उज्जवल भविष्य का सूचक है। जिस प्रकार हम अपने बच्चों को फटकारते हैं और दण्ड तक दे देते हैं, क्योंकि वह आज्ञा पालन नहीं करते, उसी प्रकार यह प्रकृति माता भी हमको विभिन्न रूपों में दण्डित करती रहती है। वास्तव में यह दशा एक अमूल्य वस्तु है। देश में विभिन्न पार्टियाँ उत्पन्न हो रही थीं, शासन और मान-पद के लोभ में आकर

मानसिक द्वेष, ईर्षा, घृणा, मत्सर उत्पन्न होरहा था। मानवीय जीवन मानव के विचारों पर आधारित है। जिस मानव, जिस घर, जिस जाति में परस्पर द्वेष, ईर्षा, मत्सर उत्पन्न होता है वह विनाश को प्राप्त होता है। 'जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना। जहाँ कुमति तहाँ विपति निदाना ॥" तुलसीदास

मौज ने चीन के आक्रमण से समस्त भारत को एक ओर लाने का प्रबन्ध किया है। यदि देश के स्त्री-पुरुष एक विचार के होकर प्रेम पूवक कार्य करेंगे तो भारत का तनिक भी बाल बांका नहीं होगा। मेरा साहित्य 'आज़ादी की कुंजी', 'मनुष्य बनो', 'विश्व शान्ति', 'जगत कल्याण' आदि मेरे भावों को भली प्रकार व्यक्त करेगा। साथ ही मेरा अनुभव मेरे घरेलू तथा अन्य घटनाओं में सत्य सिद्ध हुआ है, इसलिये मुझे साहस है और कहता रहता हूँकि शासन म निष्पक्ष कार्यकर्ता श्री नेहरू जैसे होना परम आवश्यक हैं।

संसारिक दृष्ट-कोण से सैनिक-सुरक्षा अत्यन्त आवश्यक कार्य है। किन्तु जब तक मानसिक और आत्मिक सिद्धान्तों पर साधन न होगा, यह बाह्य सुरक्षा कभी पूर्ण सफलता न ला सकेगी। मुझे पूण आशा है कि देश के कर्णधार त्रुटि पूर्ण मान प्रतिष्ठा के प्रलोभन में न आवेंगे और अपने आन्तरिक भाव से प्रयत्न करेंगे कि शान्ति पूवक सम्मान सहित समझौता हो जाय और साथ ही देश के समस्त साधन सच्चे हृदय और श्रद्धा भाव से देश की रक्षा के लिये जुटाये जायेंगे। यह मानवीयता और अमानवीयता का युद्ध हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस युद्ध के उपरान्त भारत एक महान मान-प्रतिष्ठा वाला तथा समृद्धि-शाली देश होगा, यह मेरा निज अनुभव है।

इस युद्ध के उपरान्त चुनावों की विधियों में परिवर्तन लाना अनिवार्य होगा। यह वर्तमान चुनाव की रीति एक मधुर विष है।

इसमें जातीय भेद-भाव, ईर्षा द्वेष, मत्सर-घृणा आदि के भाव उत्पन्न होते रहते हैं जो कि मनोविज्ञान के अनुसार अत्यंत हानिकारक हैं। हमारा देश भूखा है और वर्षों की दासता के उपरान्त स्वतंत्रत होने पर भी अभी इस प्रजातंत्र के योग्य नहीं है।

मानव को स्वतंत्र विचार और सत्यता की ओर लाने के लिये धर्म की अत्यंत आवश्यकता है। किन्तु इस समय जो कुछ मैंने गुरू और शिष्य के नाते अनुमान किया है, यदि वह सत्य है यद्यपि मैं उसको सत्य मानता हूँ—तो मैं चकित होता हूं कि इन धर्मों और पंथों ने वास्तविकता और सत्य को अपने अथवा धार्मिक स्वार्थ के लिये इस भाँति पर्दा में रक्खा है कि यह समस्त पक्षपाती बन गये। पक्षपात एक कोढ़ है, जो मानव के हृदय में द्वेष, ईर्षा, घृणा उत्पन्न करता है और यही हमारे कर्म बनकर हमको दुख देते हैं।

मेरी जीवन यात्रा अब अन्तिम अवस्था में है। मुझे मौज ने एक कार्य दिया था, वह उसने करा लिया। प्राणि मात्र को शान्ति।

नोट—मित्रो मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं है। मेरी खोज ने जो सिद्ध किया उसके आधार पर सहृदय होकर अपना विचार व्यक्त किया, कोई माने या न माने।

ले लो चरणों में लगा लो, हे मेरे आधार दाता।
तू है एक परम तत्व शब्द, प्रकाश का भण्डार।
अपने चरन में अब लेलो, मिटा दो मेरा संसार दाता॥
ख्वाब है, ख्वाब की दुनियाँ, देख लिया मैंने।
मिटा दो यह ख्वाब मेरा, हे मेरे करतार दाता॥
दुनियां है यह खेल सारा, लीला यह न्यारा है।
अपना दे तू प्रेम सच्चा, हे मेरे कृपालु दाता॥

दुनियाँ वालो माफ़ करना, कह चला जो कहलाया उसने।
मौज का यह खेल सारा, खिलाया जो है दयाल दाता ॥

डा० परसराम अग्रवाल के पत्र का उत्तर परम दयाल जी महाराज द्वारा

तुमने लिखा मैं कबीर हूं, सोचता हूं क्या हूं कबीर ?
इक नजर से ठीक है, मेरा अनुभव मिल गया संग कबीर ॥
मेरा आदि अकाल अनाम है, यही कबीर ने है कहा
जहाँ पुरुष तहाँ कछु नाहीं, यह है आदि पना ॥
शब्द प्रकाश से हम बढ़े, शब्द प्रकाश हमारा ज़हूर।
हमने देखा खोज कर, नहीं इसमें कोई क़सूर ॥
यह जग एक खेल है, शब्द प्रकाश लखावन हार।
इसके जाल में था फँसा, मिल गया काढ़न हार ॥
मौज अकाल थी यही, हमने धारा नर का भेष।
इस भेष में गुरु मिले, घर का दिया संदेश ॥
अपने रूप का ज्ञान है, अब नहीं जग फँसते।
इस संसार में रहते हैं, सदा हँसते हँसते ॥
तुम भी अपना रूप पहचान ला, तुम अगम अनूप।
अपने रूप की समझ रख, खेलो खेल अनूप ॥
काम करो दिन रात तुम, समझ गुरू का काम।
ऐसी रहनी से परसराम, रहोगे नित निष्काम ॥
खेल, खेल प्रेम के, खेल से हो नित काम।
सुमिरन भजन भी खेल हो, खेल हो क्रोध और काम ॥
यह अनुभव हमको होगया, जपकर राधास्वामी नाम।
वही नाम अपना नाम है, झगड़ा हुआ तमाम ॥

जो हो रहा है अच्छा है, मौज जो कर रही है, अच्छा है। चंडीगढ़ जाओ तो भी अच्छा न जाओ तो भी अच्छा। मैं सच्चे

हृदय से तुमको प्यार करता हूं और चाहता हूं :—

दुख सुख न व्यापे तुमको, सदा रहे आनन्द बहार।
यही खुशी मक़सद है जिन्दगी, समझा सार का सार॥
मजहबों पंथों में क्या धरा, सुरत है सार का सार।
सुरत ही असली तत्व है, नर तन का आधार॥
सुरत का आदि अनाम पद, मन बुद्धी से वह पार।
जिसने समझा गुरु मता, भव से हागया पार॥

तुमको मौज ने कार्य हो ऐसी सस्था में दिया है जहाँ तुम सुखी और प्रसन्न रह सकते हो।

Letter of Data Dayal to Mahatma Gulab Chandji Anand of Varanasi.

I am grateful to note that you evince so much interest in and for the cause of R. S. Dham. I cannot express my thanks for it. Really my ideas are cosmopolitan and I treat R. S. Faith as universal Spiritual Church of the world. I shall be happy to have you in our midst on the occasion of the Bhandara. Agnostics, Etheists, Scientists, Materialists and any other Ists may participate in the ceremony and I shall accord them hearty and cordial welcome. Hindus, Muslims, Sikhs, Jains, Christians and others too may come and exchange ideas without entering into unpleasant controversy. I equally invite other brethren, be they Aghories, Kabir, Nanak, Dadu Panthies and even those who are opposed to

R. S. Faith. My love is for all and I treat all of them as brothers. No matter whether they are of one mind with me or cherish different ideas. R. S. Faith, I believe to be the Fountain Head of Spirituality and it is destined to throw light on the tenets of every cult and creed, though it will take sometime to propagate itself among the members of other communities. I am not for sectarianism. R.S. Dham, is a centre of spiritual and educational activities only. There is unrest in the world and the keen commercial competition of the day and the characteristic trade marks materialism as telling much upon humanity and is responsible for the strifes and selfish struggles, manifest in the world. Poor I am, poverty is our badge. But I shall try to accomodate you as cordially as my heart is capable of doing.

R. S. Dham
4-12-1929:

Yours in and with love,
—Shiva

दातादयाल के अमृत-वचन—प्रेषक दयाल नन्दू भाईजी महाराज

जब यह भली भांति समझ में आगया कि मन में दूसरा के प्रभाव स्वीकार करने और साथ ही दूसरों पर अपने प्रभाव डालने की योग्यता विद्यमान है, तो फिर बुद्धिमान व्यक्ति को सोचना चाहिये कि हम किस मार्ग पर अपने मन को लगावें जिससे इस संसार के कार्य व्यवसाय में हमें सफलता प्राप्त हो

और हमारा जीवन बड़ा शानदार बन जाय। इस बात की इच्छा प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में स्वतः ही विद्यमान है और प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता है कि उसका व्यक्तित्व और अस्तित्व आदरणीय और श्रेष्ठ हो जाय। ऐसे व्यक्ति बहुत कम दृष्टिगोचर होंगे जो अवनति और मानरहित दशा में पड़ा रहना चाहते हों। इस प्रकार की इच्छा भी विशेषतः स्वाभाविक हमारे हृदय का गुण है और यह बड़ा प्रमाण है कि हम उन्नति और श्रेष्ठतर होने के लिये ही उत्पन्न हुये हैं और उन्नति के ही अभिलाषी हैं।

यह बात थोड़ा सा विचार करने पर हमारी समझ में आ सकती है क्योंकि प्रत्येक प्रकार के भाव-विचार हमारे मन ही के भीतर भरे पड़े हैं। सामग्री सब कुछ विद्यमान है केवल इससे कार्य लेने की आवश्यकता है। इस कार्य लेने का ज्ञान हमको नहीं है। सतसंग में जाने से हमारे भीतर जो ज्ञान दबा हुआ पड़ा है, वह उभार पर आजाता है। जो वस्तु हम में नहीं है उसे हम अपने भीतर कैसे उत्पन्न कर सकेंगे, यह कठिन बात है। यदि कोई व्यक्ति यह कहे कि हम उसे दूसरों से प्राप्त कर सकते हैं तो वह भी त्रुटि पर होगा और झूठ समझा जायगा। माँग ताँग की वस्तु से कार्य नहीं निकलता और न वह कभी अपनी हो सकती है। इसके अतिरिक्त उसके साथ हमें सहानुभूति भी कभी न होगी और न उसकी ओर हमारा आकर्षण ही उत्पन्न होगा।

कोई व्यक्ति हमसे इसका प्रमाण चाहेगा कि सब कुछ हमारे भीतर कैसे विद्यमान है इसका प्रमाण यह है कि इसकी इच्छा हमारे भीतर गुप्त है। बच्चा उत्पन्न होते ही प्रश्न करने और खोज की सोपानों से पार जाने का इच्छुक प्रतीत होता है। वह क्या चाहता है?

उसे तीन बातों की इच्छा रहती है। प्रथम बात यह है कि वह जीवन चाहता है जिसके कारण से वह उत्पन्न होते ही दूध

पीने लगता है। दूध पीना उसे किसने सिखाया है। किसी ने भी नहीं, यह उसका स्वाभाविक गुण है। द्वितीय बात यह है कि बच्चा प्रसन्नता का इच्छुक है। प्रारम्भिक जीवन से ही वह प्रसन्नता के लिये रोता रहता है। उसका रोना ही प्रत्यक्ष प्रमाण है कि वह प्रसन्नता और आनन्द चाहता है। और जहाँ कोई व्यक्ति उसकी प्रसन्नता और आनन्द में बाधक होता है, वह रोने लग जाता है। इस प्रसन्नता का पाठ उसे किसने पढ़ाया है? किसी ने भी नहीं। प्रसन्नता का भाव उसके अन्तर में स्वयं विद्यमान है। तीसरी बात यह है कि बच्चा ज्ञान का अभिलाषी है। उसका बार-बार किसी वस्तु का महत्व ज्ञात करते रहना और पूछताछ करते रहना प्रत्यक्ष ज्ञान की अभिलाषा का भाव बतलाता है। यह तीन बातें हैं जो उसमें पहिले ही से विद्यमान हैं। ये विशेष हैं और शेष समस्त भाव-विचार उन्हीं के क्रम में साधारण हैं। यह तुम स्वयं सोचो और समझो कि क्या तुम किसी बच्चे को पराधीनता की दशा में रख सकते हो? वह स्वयं इस निकृष्ट दशा को कभी नहीं चाहता। वह स्वाभाविक प्रकृति की ओर से स्वतन्त्र बनकर आया है। माता पिता जब कभी इस बन्धन में रखना चाहते हैं तो वह मचल पड़ता है, हठ करने लग जाता है और जब उसका वश नहीं चलता तो फिर वह धाडें मार मार कर रोने लग जाता है। यदि इसी प्रकार तुम उसके समस्त भावों का अध्ययन करने लगोगे तो स्वयं वास्तविकता का पर्दा स्वतः उठता हुआ दृष्टिगोचर होगा। स्वतन्त्रता जीवन है और बंधन मृत्यु है। स्वतन्त्रता प्रसन्नता है और बंधन आपत्ति है। स्वतन्त्रता ज्ञान है और बंधन अज्ञान है। यदि हम अपने ही बच्चों के जीवन की ओर ध्यान दें तो हम स्वयं ही वास्तविक रहस्य से परिचित होने लगेंगे।

यह ऐसा क्यों है? क्योंकि हमारे स्वभाव में विद्यमान है।

मछली को स्वभावतः पानी से प्रेम है। वह एक क्षण भी पानी से पृथक नहीं रह सकती। उसे जल से पृथक करदो, क्षणमात्र में तड़प तड़प कर मर जायगी। उसे पानी में डालदो तो वह फुदकती हुई और खेलती हुई दृष्टिगोचर होगी। इसी प्रकार हम भी सत, चित् और आनन्द के सागर की मछलियाँ ही हैं। इससे हम कभी किसी दशा मेंभी प्रथक, अपरिचित अथवा भिन्न नहीं हैं। यह कारण है कि उनकी हमको इच्छा है, तड़प है और अभिलाषा है।

हम क्या हैं? इस पर प्राणी बहुत कम विचार करता है। हम सत, चित् और आनन्द हैं। ब्रह्म क्या है? इसका भी ज्ञान गिने चुने व्यक्तियों को होता है। ब्रह्म भी हमारे समान सत, चित् आनन्द कहा जाता है और हमारा उसके साथ सदैव का सम्बन्ध है। हम उससे भिन्न नहीं, जो वह है, वही हम भी हैं। अज्ञानी जीव इस बात का बहुत विरोध करें किन्तु वह कभी इस सिद्धान्त के विरुद्ध कोई प्रमाण नहीं ला सकते। जिसका जी चाहे इस सिद्धान्त को तोड़ने का भरसक प्रयत्न करके देखले, किन्तु वह सदैव ही असफल रहेगा।

ऐसी सामग्री का हमारे अन्तर में विद्यमान रहना यह सिद्ध करता है कि हम उन्नति के अभिलाषी हैं। क्योंकि हम ब्रह्म की सन्तान हैं और इसी उन्नति को चाहे वह सांसारिक हो अथवा परमार्थिक, हम बेखटके और निडर होकर निविरोध ब्रह्म हो कह सकते हैं। ब्रह्म ही हमारा आदर्श है और ब्रह्म ही हमारा इष्ट है। वह हमारे अन्तर में है और हम अपने हृदय के पर्दों को फाड़कर उसे अपने ही भीतर खुले हुये नेत्रों से देखने के जिज्ञासु हैं। हमारे जीवन का एक एक क्षण इसी कार्य के लिये व्यय हो रहा है। रूप निश्चय ही प्रथक प्रथक हैं। हमारे कार्य करने की विधि में भी निश्चय ही भिन्नता है किन्तु हम जा किधर रहे

हैं, उसी की ओर हमारा पग बढ़ता हुआ चला जा रहा है। हम उससे मिलना चाहते हैं और मिलकर एक हो रहना चाहते हैं।

धर्म, पंथ व्यर्थ हमारे साथ विरोध करके हमारे भावों-विचारों के कुचलने का प्रबंध कर रहे हैं। तर्कशास्त्र व्यर्थ हमसे लड़ झगड़ कर हमें असमंजस में डाल रहे हैं। हम धन क्यों चाहते हैं? हम मान-प्रतिष्ठा के इच्छुक क्यों हैं? हम संस्कार, अधिकार और पद को क्यों मेन देते हैं? क्योंकि यह धन, मान-प्रतिष्ठा और मद ही ब्रह्म है। वह हममें और हमारे भीतर विद्यमान है। कोई हमें रोकता क्यों है? हमको क्यों अपने भाव विचारों के अनुसार कार्य नहीं करने देते? क्या निर्धनता, अवशता और अनाधिकार ही ब्रह्म है? कभी नहीं। यह समझ समझ का फेर है। प्राणी भ्रम और संशय में पड़कर पथ भ्रष्ट होरहे हैं। इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं है। तुम स्वयं सोच देखो। वास्तविकता समझ में आजायगी और तुम सन्तुष्ट हो रहोगे।

इन वस्तुओं की खोज में हमारी बेचैनी, शीघ्रता, असंतोष तथा लोभ लालच यह सब स्पष्टतः बता रहे हैं कि हमको किसी पूर्ण धन, पूर्ण आदर, मान, पद और शक्ति की लालसा है और यह सभी ब्रह्म है। ब्रह्म के अतिरिक्त यह हो क्या सकती हैं? यह कभी भी सम्भव नहीं है कि आंशिक धर्म, मान प्रतिष्ठा, शक्ति हमको सन्तुष्ट कर सके। जिसको देखिये लालच में आगे ही बढ़ता हुआ चला जारहा है और वह उस समय तक बराबर बढ़ता ही चला जायगा जब तक कि पूर्णता के पद को प्राप्त न कर लेगा। इसी कमाल का नाम ब्रह्म है।

अब विषय स्पष्ट हो गया। तात्पर्य समझ में आगया। हमारे हृदय में उन्नति की सामग्री विद्यमान है। मन के भीतर अधिकार और संसार का पदार्थ जो प्रत्येक व्यक्ति के भीतर छुपा हुआ है वह व्याख्या का कार्य करता हुआ उसे जीवन का अंश बनाना

चाहता है। इसी अधिकार और संस्कार के गुण को चमका कर उसको कार्य के योग्य बनाने का साधन ही मन की गहन्त है। इस साधन से मन के एकाग्र करने का रहस्य समझ में आजाता है। मन की एकाग्रता ही योग और मिलाप है। और योग और मिलाप ही प्रसन्नता है जो जीवन का लक्ष्य है।

मौज (लेखक—परम दयाल जी महाराज

ऐ विश्वप्रेमी! खत मैं लिखू, क्यों इसका मुझको पता नहीं।
जाने मौज दयाल ही, मुझको कोई पता नहीं॥

अभी एक कोई सज्जन ईश्वरसिंह हैं, वे लिखते हैं कि एक सप्ताह के भीतर उन्होंने मुझे दो बार अपने अन्तर प्रकाश स्वरूप में देखा आदि आदि। पत्र पढ़ा:—

चूँकि मैं नहीं था खयाल हुआ, यह क्या है जग का खेला।
इन्सान का मन विचित्र है, करता है नाना विधि खेला॥
हुई आँख बंद खत छूट गया, विस्माधि आ गयी थी।
घट में चढ़ी सुरत मेरी, तन मन को भूल गई थी॥
शब्द अनाहद गूँज उठा, प्रकाश का चक्र चलने लगा।
कुछ देर के बाद आंख खुली देखा, वही मकान मेरा था॥
अब चेतन्ता मैं हूं।

शुकराना करता दयाल का हूं, जिसने मिटाया अज्ञान मेरा।
सुरत फंसी मन में थी, करती रहती थी मेरा तेरा॥
अब हालत मेरी बदल गयी, जिन्दगी ने नया शकल लई।
कौन करे कर्म यहाँ, मिट गया हैरा फैरा मेरा॥

आहा? दाता दयाल जी का शब्द याद आता है।

फ़क़ीरा जा भवसागर पारा
जग है दुविधा जग दुचिताई, जग दुई व्यवहारा।
दुःख सुख राग द्वेष विष अमरत, यह सब द्वन्द पसारा॥

सहज में जग का रूप लखाऊँ, सहित विवेक विचारा।
यह समझाय तोय अपनाऊँ, मेंटूँ द्वन्द विकारा॥

आदि-आदि, अन्तिम कड़ी है :—

जब लग प्रारब्ध है भाई, भोग काट दे सारा।
भोगे प्रारब्ध तब कुछ नाहीं आगे अगम अपारा॥
कट गई काल कर्म की फाँसी, जन्म जुआ नहीं हारा।
राधास्वामी की बलिहारी, रहे फ़क़ीर सुखारा॥

आहा! यह कार्य जो मैंने जीवन में सतसंग का किया, यह मेरा प्रारब्ध कर्म था। जो अब समाप्त हुआ। इस कर्म से मुझे अत्यन्त लाभ पहुँचा। तुमको भी इस कर्म से जो तुम करते हो लाभ पहुँचेगा और पहुँच रहा है। अब लिखने लिखाने को 'जी' नहीं चाहता। जिज्ञासुओं, अधिकारियों और खोजियों के लिये यह मेरा कर्म, मेरा साहित्य लाभदायक सिद्ध होगा।

मैं इस बार धाम नहीं जा रहा हूँ और काई पता नहीं सम्भवतः बसन्त पर भी न जाऊँ।

यद्यपि मैं अपनी पुकार को इन धार्मिक और पान्थिक पथ प्रदर्शकों और, गुरुओं, महात्माओं, साधु सन्तों और देश के करुणाधारों को पहुँचाना चाहता था। इसका मन्तव्य केवल इतना ही था कि इनको सत्यता और वास्तविकता का पता लग जाय और यदि यह चाहें तो अपना और दूसरों का भला और कल्याण कर सकें। किन्तु सुनता कोई नही है। सम्भव है यह मेरी अपनी उन्मत्तता हो, और यह उन्मत्तता सन्त कबीर को भी थी :—

साधो देखा जग बौराना।
साँच कहूँ तो मारन धावे, झूँठे जग पतियाना।
हिन्दू कहत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना॥
आपस में दोऊ लड़े मरत हैं, मरम काहू नहीं जाना।
कहा विधि कोई समझावे इनको, भूले भरम गुमाना॥

और इस समय वातावरण और परिस्थितियों के अनुसार मैं यह पुकार कर रहा हूं कि :—

अरे ! मूर्ख मानव ! तू शासन के अहंकार में आकर विज्ञान की उन्नति करता हुआ देशीय दृष्टिकोण से अपनी मान प्रतिष्ठा और बड़प्पन रखने की इच्छा करता है। रूस, अमरीका, पाकिस्तान, चीन और भारत आदि के खिचाव की ओर जब दृष्टि जाती है तो बहुधा हँसी भी आती है और रोना भी आता है। यहाँ बड़े-बड़े प्रतापी आये और चल बसे।

न भक्त रहे, न पीर रहे, न अवतार न पैग़म्बर।
सब ही गये काल के मुख में, काल चक्र है दुस्तर॥

यही दशा इन महन्तों, साधुओं आदि की है। इसलिये जीवन की खोज के पश्चात मौज आधीन पुकार कर चला हूं कि, 'मनुष्य-बनो'।

दाता दयाल जी ने आदेश दिया था कि फ़क़ीर चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। जो समझा, जो अनुभव किया वह कह चला। दावा किसी बात का नहीं है।

कौन हूँ मैं क्या हूँ मैं, और क्यों यहाँ आया।
खोजने निकला था मैं, खुद आपही हूँ हराया॥
जात है एक परमतत्व की, शब्द प्रकाश का रूपा।
दरअस्ल वह खामोशी है, अरंग है और अरूपा॥
हुआ तमव्वुज बन गई रचना, इसमें मैं भी बना।
जो मौज का काम था, उसने मुझ से ले लिया॥
किसको कहूँ बुरा, किसको कहूं भला, हैरान हूँ।
होना जो है हो गया, और बाक़ी खुद ही हो रहा॥
मौज ही है मौज ही है, मौज अब मुन्शीलाल।
मौज में सरशार हो कर, फ़क़ीर यह झूम रहा॥
आखिरी मंज़िल है बस इक, गुम हो जाऊँ ज़ात में।
क्या खबर है मौज क्या है, जिस्म क्यों क़ायम रहा॥

खुश रहो आज़ाद रहो, दिल के शाद रहो अज़ीज़ ।
कर्म कटाने में तू मेरा, हाँ बड़ा हामी रहा ।।

मौज (परम दयाल जी महाराज)

जब से युद्ध आरम्भ हुआ है स्वाभाविक रूप से देशीय समाचार और परिस्थितियों से जानकारी प्राप्त करने को मन चाहता है। पड़ौस के घर जा कर रेडियो सुना करता था। मेरे मित्र मास्टर मोहनलाल जी ने मेरी आपत्ति दूर करने के लिये अपना गोका रेडियो भेज दिया है।

समाचार सुनता रहता हूँ। देश के संगठन और एकत्व भाव को देखकर भारत वर्ष की उन्नति का दृष्य सम्मुख आ रहा है। उन्नति किस बात में है ? प्रेम, प्रीति और सहयोग में। चार दिन से सोचा, ऐ फ़क़ीर ? तू क्या सहायता कर सकता है।

मेरा एक हृदय है जो मानव जाति के कल्याण का भाव रखता है। दातादयाल वर्णन किया करते थे, फ़क़ीर ! यदि किसी दुखिया की सहायता नहीं कर सकते तो उसके लिये शुभ भावना ही दिया करो। यह शुभ भावनायें सदैव देता रहता हूं। मैं धनी नहीं हूँ। मौज ने मुझ धन नहीं दिया। यदि दिया तो मैंने जीवन में वितरण कर दिया। यहाँ तक कि अपनी स्त्री के आभूषण भी दे दिये थे।

अब स्त्री की बीमारी में ठा० गिरधरसिंह सहायता करते हैं। और मैं लगभग ४५) रु० मासिक कमा लेता हूं। इसमे से ५) मासिक इस अवसर पर देने का प्रण किया है। इन ५) रु० के देने से आज से अपनी स्त्री की औषधि बाज़ार से पैदल लेने जाता हूं, पहले रिक्शा पर जाता था। ३५ पैसे प्रतिदिन बचाकर देश की सहायता करने का प्रण किया है। लोगों ने लाखों दिये। मेरी यह तुच्छ राशि शुभ भावनाओं सहित देश के भेंट है। किन्तु भारत वासियों को कुछ कहना चाहता हूं। क्यों ? विवशता किस बात की ? मेरा

अनुभव और ज्ञान जो मैंने समस्त जीवन खोने के पश्चात प्राप्त किया है, वह करुणामय हृदय से लिखवा रहा है। सुनो! जो कुछ कहना चाहता हूं उसके कहने से पूर्व आपका ध्यान श्रीकृष्ण और सुदामा के जीवन चरित्र की ओर दिलाता हूं। ये दोनों महापुरुष गुरु आश्रम में पढ़ते थे। एक दिन दोनों लकड़ी काटने बन में गये। गुरु की पत्नी ने कुछ भुने हुए चने सुदामा जी को दिये कि जब भूख लगे, तुम दोनों खा लेना। बन में रात्रि हो गई, वर्षा होने लगी, जाड़ा पड़ने लगा, रात्रि वृक्ष पर काटी। सुदामा को भूख लगी, वह अकेला ही उन चनों को खाने लगा। श्रीकृष्ण जी ने पूछा क्या खाते हो? सुदामा ने उत्तर दिया, कुछ नहीं खाता, जाड़े के कारण केवल दाँत बज रहे हैं। इस बात का प्रभाव और कर्म का फल जो सुदामा को समस्त आयु भुगतना पड़ा सब जानते ही हैं। चूँकि सुदामा की स्त्री पतिव्रता थी इस कारण उनके कर्म पलट गये किन्तु कर्म के फल से न बच सके।

मेरे जीवन के अनुभव हैं। चार पाँच सज्जनों को जो मिल जुल कर काम करते हैं, मैंने यह आदेश लिखकर दिया था कि आपस में बिलकुल हेरा फेरी मत करना। यदि हानि हो तो मैं उत्तरदायी हूँ। वर्षों से उनके काम अच्छे चल रहे हैं। वह मुझे साधु, महात्मा समझ कर आदर मान करते हैं। किन्तु जो कुछ उनको मिला, वह उनके परस्पर सद्व्यवहार और सत्यता से मिला। इसलिये भारत के कल्याण हेतु सहानुभूति रखते हुए मौज आधीन कहे जा रहा हूँ। विशेषत: इन शासकों अथवा कार्य कर्ताओं को कि इस फंड में से जो आप एकत्रित कर रहे हैं। एक पैसे की भी बेईमानी मत करना अन्यथा सिर पीट कर रोओगे। मेरी बात को ध्यान पूर्वक सुनो।

मैंने बड़ी-बड़ी संस्थायें देखी हैं जहाँ नीयत में फ़र्क़ आया सब काम बिगड़ जाता है। भारत वर्ष को चरित्र, व्यवहार, शिष्टाचार सभ्यता और मानवता की अत्यन्त आवश्यकता है। मैं जो कुछ

लिख रहा हूँ जीवन के निज अनुभव अपने और कुछ औरों के आधार पर है। यद्यपि मैं जानता हूँ कि नक़्क़ारखाने में तूती की आवाज़ कोई नहीं सुनता। किन्तु तूती को तो बोलना है। कोई सुने अथवा न सुने। प्रत्येक व्यक्ति को फल उसकी नीयत का मिलता है।

जहाँ तक हो सकता है मैं संसार की भलाई के लिये कार्य करता हूँ। अपने घर के भेदों को भी छुपाये नहीं रख सकता। सुनो! मैं बसरा बग़दाद में कर्मचारी था। मेरे माता-पिता घर पर थे। हमारे एक निकट सम्बन्धी का पुत्र चरित्रहीन होने के कारण अपने रुपये पैसे को नष्ट करता था। मेरे घर वालों और चचेरे भाई ने इस नीयत से कि उसकी भूमि लेकर अपना घर वहाँ बनायें, उसको ऋण देना आरम्भ कर दिया जब ऋण बढ़ गया तो उसकी भूमि ले ली। जब मैं बसरे से वापिस आया तो मैंने देखा कि हमारा घर नई भूमि में बना हुआ था। चूँकि मैं इस रहस्य अथवा ज्ञान को जानता था कि इस घर के लिये किस नीयत से भूमि ली गई है और इसका परिणाम नीयत के अनुसार क्या होगा। मैंने स्पष्ट कहा कि न भाई और न पिता ही इस मकान में कोई न बसेगा और ऐसा ही हुआ। मेरे भाई ने पूना में कोठी बनवा ली। और मैं होशियारपुर में रहता हूँ। चचेरा भाई मर गया, सन्तान स्वतन्त्र हो गई। घर बिना बसे पड़ा हुआ है।

भारत वासियों मेरे नेत्रों में आँसू हैं, जो मेरा अनुभव जीवन में हुआ वह भारत के कल्याण हेतु गुरु ऋण उतारने हेतु लिख रहा हूँ। कोई सुने या न सुने मुझे इसकी परवाह नहीं है। यदि त्रुटि पर नहीं हूँ तो इन्हीं दोषों के कारण अथवा हमारे बुरे कर्मों का परिणाम है कि हमें इस संसार में आये दिन दुख, आपत्ति और कष्ट आते रहते हैं। अधिक लिखा नहीं जाता।

ग़ज़ल पीरेमुग़ां साहब

मुझको शमये नूर का, परवाना समझना।
उस बुत की अदा का, मुझे दीवाना समझना॥
इस दुनियाँ में गर आगया, आग़ोशे अजल से।
हिम्मत से चला आया हूं, मरदाना समझना॥
जिस्मो दिलो जान अक़्लो ख़िरद, हैं साथ मेरे।
ख़िलवत में हूं गर, तुम मुझ तन्हा न समझना॥
मुम्किन नहीं वह हज़्म करे, पेट में अपने।
मुझको न कभी मौत का, तुम दाना समझना॥
आँखें हैं खुली भूल के, अंधा न समझना।
मैं सब में अयाँ रहता हूं, अख़फ़ा न समझना॥
दिल मेरा है मैं दिल का नहीं, ख़ूब समझलो।
दिल दे दिया गर उसको, न दीवाना समझना॥
दिल में है ख़ुदा, दिल में हैं क़ुदरत के करिशमे।
दिल को मेरे इरफ़ान का, काशाना समझना॥
मयनोश हूँ, मयख़ुआर, मयआशाम हूं सच्चा।
वहदत की जो पी मय, मुझे मस्ताना समझना॥

जिस्म को देख लो, तुम रूह को क्या देखोगे।
वह तो बेगानों की, नज़रों से, छुपा करती है॥
यह दुआ है कि चमन, इश्क़ का शादाब रहे।
आँखों की मेरी नदी, ख़ूब बहा करती है॥
कैसे होगा नहीं, सोहबत का असर तुम देखो।
गर्द जब साथ, हवा के ही उड़ा करती है॥

नोट—कृपया अपना वार्षिक मूल्य भेजकर और दो नवीन ग्राहक बनाकर सहयोग दीजिये।

मनुष्य बनो के नियम

१—शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार, सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की बाणी को सरल सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक, उन्नति कारक, तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म पन्थ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र हर मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा :

६—लेखों को घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जायँ।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नंबर व पता साफ़ साफ़ लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जवाबी कार्ड आना चाहिए।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुचे तो पहले अपने यहाँ डाकखाने से पूछ ताछ करके वहाँ से जो उत्तर मिले वह अगला अंक निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रति बिना मूल्य जासकेगी अन्यथा नहीं।

९—नमूना ।) के टिकट मिलने पर ही भेजा जा सकेगा।

१०—एक वर्ष से कम के ग्राहक नहीं बनाये जायँगे। जो किसी भी मास से बन सकते हैं।

११—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेजर के नाम से भेजने चाहिये मनिआर्डर कूपन पर अपना पता साफ़-साफ़ लिखना चाहिए। और पते की तबदीली भी।

मैनेजर—**गुन्शीलाल गोविल** (विश्वप्रेमी) मजिस्ट्रेट प्रथमश्रेणी बेंच

"मनुष्य बनो कार्यालय" (दयाल कम्पाउण्ड, पेच जामाजी)

यू० एस० जैन रोड, अलीगढ़ (उ० प्र०)

हमारे यहां की पुस्तकें

१—मनुष्य बनो हिंदी ।।=)
२—जागृत जीवन ,, ।।।)
३—मानवधर्म प्रकाश उर्दू १।।) हिंदी ।।।)
४—सन्तमत सार हिंदी १)
५—फ़क़ीर शब्दावली ,, ।।=)
६—आत्मिक आदर्श ,, ।।।)
७—राधास्वामी मत ,, ।=)
८—आकाशीय रचना उ. ।।), हिंदी ।।)
९—सार भेद ,, ।।) ,, ।।=)
१०—शब्द सार ,, ।।।)
११—मनोकामना देवी ।=)
१२—नय्यरे अनवर उर्दू ।।।)
१३—आवागमन ,, ।।।) हिंदी १)
१४—सदाये फ़क़ीर ,, ।=)
१५—हयाते नौ ,, ।)
१६—सचाई ,, ।)
१७—विष्णु संहिता हिन्दी ।।)
१८—शिव ... ,, १।।)
१९— ... ।।।)
२०— ... ।।।)
२१— ... स्वत ... हिन्दी १।।)
२२— ... शब्द ... हिंदी ।।=)
२३— ... योगी हिन्दी ।)
२४— ... कुन विद्या हिन्दी ।।)
२५—दस अवतार तिरंगा ।)
२६—परमार्थ सुधार हिन्दी ।।।)
२७—गृहस्थी गुरु उर्दू ।।।)
२८—भाग्य को बढ़ाओ हिन्दी ।)
२९—निष्कलंक अवतार हिंदी उर्दू ।।)
३०—विश्वहितैषी उ. १।।) विश्वप्रेमी ।।)
३१—तरक्क़ी का राज़ उर्दू ।=)
३२—जगत कल्याण, जगत निस्तार
३३—जगत उद्धार उर्दू २) १।।) १।)

३४—यथार्थ शान्ति संदेश उर्दू ।।।) हिन्दी ।)
३५—कानूने ख्याल हिन्दी १)
36—Message of Peace 0-10-0
37—Truth & Reality 0- 6-0
38—Independence Day Leaflets 0- 2-0
39—Real Independence 0- 5-0
40—Light of Data Dayal 0-12-0
41—Light on Anandyog 0- 3-0

प्रकाशक व मैनेजिंग एडीटर
लाल गोविन्द (विश्वप्रेमी)
"मनुष्य बनो कार्यालय"
कम्पाउण्ड, पेच जामा जी
० जन रोड, अलीगढ़।

Regd. No. A 808

कृपया न मिलने पर निम्न पते पर लौटा दें :—

प्रा० संख्या 12/121 "मनुष्य बनो कार्यालय"
दयाल कम्पाउण्ड, पेच जामाजी अलीगढ़ (उ० प्र०)

श्रीमान्...............................